BIHAR SHODH SAMAAGAM, VOL. 1, ISSUE 1,
p.p 29-32 (2023) ISSN : 3048-6971
छत्तीसगढ़ी साहित्य में 1857 की क्रांति
श्रीमती माग्रेट कुजूर

1857 की क्रांति को कई नामों से जाना जाता है। जिनमें भारतीय विद्रोह, सिपाही विद्रोह, महान् विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता का पहला विद्रोह शामिल है। जिसमें सोनाखान के जमींदार लोकप्रिय आदिवासी नेता शहीद वीर नारायण सिंह ने जनता के हितों की रक्षा एवं अंग्रेजी साम्राज्य के शोषणवादी नीतियों के विरूद्ध व्यापक विद्रोह किया था। जिसका दमन ब्रिटिश सैन्य आधिकारी स्मिथ ने किया था। परिणामस्वरूप रायपुर के जयस्तंभ चौक में 10 दिसम्बर 1857 को वीर नारायण सिंह को सार्वजनिक रूप से फांसी दी गई। अंग्रेजों के विरूद्ध स्वतंत्रता संघर्ष करने वालों में शहीद वीर नारायण सिंह को छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद के रूप में जाना जाता है। सन् 1857 की घटना छत्तीसगढ के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। यहाँ के अधिकांश कवियों ने वीर नारायण सिंह की वीरता षौर्य, बलिदान और अंग्रेजी हुकुमत के जुल्मों का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है–

"किस्सा आप लोगन ला, एक सुनावत हौं भाई।
अट्ठारह सौ सन्तावन के, साल हमर बड़ दुखदाई।
बादसाह बिन राज हमर, भारत मा वो दिन होवत रहिस।
अपन नीचता से पठान मन, अपन राज ला खेवत रहिस।"[1]

उक्त पंक्ति में कविवर गिरधर वैष्णव ने देश की दुर्दशा का वर्णन किया है एवं मुगलों का पतन और अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को अपनी कविता में पिरोया है। इसी प्रकार से कवि लक्ष्मण मस्तुरिहा ने वीर नारायण सिंह के त्याग और बलिदान को लघु खण्डकाव्य 'सोनाखान के आगी' में प्रस्तुत किया है–

"अठरा सौ सन सनतावन म तारिख उन्नीस फागुन मास
बंदी बना बीर नरायन के अंगरेज बइरी ले लिन प्रान।"[2]

उक्त दृष्टिकोण से वीर नारायण सिंह के बारे में इतिहास में उल्लेखित तथ्यों का अवलोकन नितांत आवश्यक हो जाता है, यह घटना छत्तीसगढ़ के इतिहास में सोनाखान का विद्रोह के नाम से दर्ज है। "रामराय की मृत्यु के पश्चात् वीर नारायण सिंह सोनाखान के जमींदार बने। वे जनहितकारी कार्यो में रूचि रखते थे। इसलिए वे अपनी प्रजा में लोकप्रिय हो गए। दुर्भाग्यवष सन् 1856 ई. में इस क्षेत्र में भीषण अकाल पड़ा लोग भूखों मरने लगे। लोंगों की जान की रक्षा के लिए उन्होने एक व्यापारी के गोदाम का अनाज किसानों में बाँट दिया। उन्होंने इस कार्य की सूचना रायपुर के डिप्टी कमिश्नर को दे दी, अँग्रेजी सरकार ने वीर नारायण सिंह के इस कार्य को कानून विरोधी समझा। अतः कृषकों की दयनीय स्थिति, अकाल की विकरालता तथा वीर नारायण सिंह की मानवता को दुर्लक्ष्य कर डिप्टी कमिश्नर ने व्यापारी की रिपोर्ट के आधार पर वीर नारायण सिंह को गिरफ्तार कर लिया।"[3] जेल में भेजने के बाद वीरनारायण सिंह ने जेल से भागने की योजना बनाई और वे जेल के सैनिकों के सहयोग से जेल से भाग निकले। "जेल से छूटने के बाद वीर नारायण सिंह सोनाखन पहुँचे और वहाँ उन्होंने अपने नेतृत्व में 500 सैनिकों की एक सेना संगठित की। वीर नरायण सिंह के जेल से भाग निकलने की सूचना पाकर डिप्टी कमिश्नर बड़े चिंतित हुए, अतः अँग्रेजों की एक सेना

श्रीमती माग्रेट कुजूर
सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय धरमजयगढ़,
जिला रायगढ़ (छ. ग.)

को सहायता के लिए बुलाकर सैनिक साजो–सामान बटोरता हुआ स्मिथ 29 नवम्बर को सोनाखान के लिए रवाना हुआ। कुछ सेना उसने बिलासपुर से बुलवाई थी। यदि वीर नारायण सिंह इन्ही दिनों स्मिथ पर आक्रमण कर देते तो उनकी स्थिति मजबूत हो जाती, परन्तु वे ऐसा न कर सके, जो आगे चलकर उनके लिए नुकसानदायक सिद्व हुआ।"[4] अँग्रेजों की संख्या अधिक होने, अस्त्रों की बहुलता के कारण वीर नारायण सिंह पुनः गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें रायपुर जेल में डाल देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया 10 दिसम्बर सन 1857 को उन्हें रायपुर के जयस्तंभ चौक में फाँसी की सजा दी गई।

शहीद वीर नारायण सिह का विद्रोह इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है, चूँकि यह घटना छत्तीसगढ़ में घटित हुआ था तथा उसका नायक भी छत्तीसगढ़िया था। वीर नारायण सिंह की वीरता पर सबसे अधिक कविताओं का सृजन श्री हरि ठाकुर ने किया है यह छत्तीसगढ़ की धरती का पहला युद्व था, जिसे वीर नारायण सिंह ने अँग्रेजी सेना के विरूद्व लड़ा था। श्री ठाकुर ने इसे आजादी का पहला राग लिखा है–

"धधके लगिस वीर बंगाल
दिल्ली के रंग होगे लाल
माचिस रकत के होली फाग
आजादी के पहली राग
काँपिस अँग्रेजी षासन
डोलिस लन्दन के आसन
टूट परिन जब हमर जवान
भगिन फिरंगी ले के प्रान
छत्तीसगढ़ भी ठोंकिस ताल
अठरा सौ सन्तावन साल
गरजिस वीर नरायन सिंह
मेटिस सबे फिरंगी चिह्न।"[5]

छत्तीसगढ़ के कवियों ने इतिहास के वर्णन में अपनी भावनाओं को प्रमुखता से रखा है। यही कारण है कि ऐतिहासिक तथ्यों के वर्णन में भावनात्मक पक्ष अधिक प्रबल दिखाई देता है। सन् 1857 ई. के विद्रोह की हलचल पूरे अंचल में भी दिखाई दे रही थी। यद्यपि ये घटनाएँ केवल सैनिक विद्रोह का ही प्रभाव मानी जा सकती है, तथापि नागरिक आन्दोलन से इस समय के अस्तित्व को भी पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता। सन् 1857–58 का विद्रोह जिस प्रकार समूचे उत्तर भारत में राजनैतिक जारूकता का परिचय दे रहा था। समुचे छत्तीसगढ़ सहित संबलपुर से रायपुर तक मंडला से बस्तर तक विद्रोह की आग फैल चुकी थी, जिसकी अनुपम बानगी केयूर भूषण की कविताओं में देखने को मिलती है–

"मंडला जागिस, गोड़वाना जागिस
जागिस बस्तर के मुड़िया सरदार।
सन सनतावन म बागी जागिस
सम्बलपुर के राजा जागिस
जागिस रायपुर के हवलदार।।"[6]

उक्त कविता में मैगजीन लश्कर श्री हनुमान सिंह के द्वारा किये गए विद्रोह को 'जागिस रायपुर के हवलदर' से संबोधित किया गया है। "18 जनवरी सन् 1858 ई. को 7:30 बजे शाम को श्री हनुमान सिंह ने तीसरी टुकड़ी के सार्जेण्ट मेजर सिडवेल की उसके घर में घुसकर हत्या कर दी। इस घटना से रायपुर में विद्रोह आरंभ हुआ।"[7]

भारत को 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली, इसके पूर्व स्वतंत्रता आन्दोलन देश में लंबे समय से चलता रहा, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वह आन्दोलन और उनके नेतृत्वकर्ता महानायक के रूप में इतिहास की विषयवस्तु के रूप में उभरे। यही करण है कि सन् 1950 ई. के बाद की कविताओं में हमें गॉधी जी के जीवन चरित्र और स्वधीनता आन्दोलन की गाथा

श्रीमती माग्रेट कुजूर
सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय धरमजयगढ़,
जिला रायगढ़ (छ. ग.)

ISSN : 3048-6971

अधिक सुनने को मिलती है। 20वीं सदी के प्रारंभिक काल में छत्तीसगढ़ की पावन भूमि पर अनेक आन्दोलन हुए, जिनमें प्रमुख है 'भूमकाल विद्रोह' जिसके नायक गुण्डाधुर थे। गुण्डाधुर का भूमकाल विद्रोह छत्तीसगढ़ के इतिहास में एक अविस्मरणीय घटना मानी जाती है। कवि गणेश यदु 'भूमकाल के महानायक' शीर्षक कविता में लिखतें हैं–

"बस्तर म ओन्नीस सौ दस म, लड़े गईस मुक्ति संगराम।
गुंडाधुर के अगुवानी म, हो गईस भूमकाल महान ।।
करांति नायक गुंडाधुर के, दसवाँ अउ अंतिम संगराम।
बस्तर म मुरिया राज खातिर, लड़े गइस ए संगराम
नेतानार निवासी नायक, गुंड़ाधुर बड़ बीर महान।
वो समे अतियाचार करय, वैद्यराज अँगरेज–दीवान।।"[8]

गुंड़ाधुर ने बस्तर अंचल में अँग्रेजी सत्ता के खिलाफ जो मोर्चा उठाया था एवं जनता को संगठित किया था वह ऐतिहासिक घटना है। स्वतंत्रता के पूर्व का काल एक तरह से नवोन्मेश का काल था एवं आन्दोलन अपने तीव्र रूप में गतिशील था। आन्दोलन आम जनमनस को प्रभावित कर रही थी। अँग्रेजी सत्ता के विरोध में कविगण आक्रोश अपनी कविताओं के माध्यम से कर रहे थे। पं. लोचन प्रसाद पांडे की उक्त पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

"रोज करोड़ो रूपिया चले विलायत जाथे।
सरहा चिथरा चिरकुट चेंदरा उहाँले आथे।।
लेय ओइला नहीं, प्यार तूँ करास्वदेशी।
परदेशी ओन्हन कभू जावे दिन देशी।।"[9]

उक्त कविता के माध्यम से कवि यह बताना चाहते है कि अँग्रेज भारतीय धन को लूटते थे और यहाँ के कच्चा माल कपास को मैनचेस्टर ले जाते थे, जहाँ उन्हें फैंसी रूप में तैयार कर भारत में महँगे दामों में बेचते थे। अंग्रेजों द्वारा छत्तीसगढ़ का शोषण किये जाने से यहाँ के कवि दुःखी थे, कवि गिरधर वैष्णव ने अपनी व्यथा को इस प्रकार व्यक्त किया है–

"चीज स्वदेशी नइ लेके, भारत ला कंगला करवाएन।
माल विदेशी अउ विलायती, लेके नकटा कहलाएन।।
हमर देस के माल खजाना, एको बाँचे नइ पाइस।
लेग–लेग के सकल चीज ला, विलायत मा भरवाइस।।
अँगरेजवा मन हमला ठग के, हमर देस मा राज करँय।
हम कइसे नालायक बेटा, उँकरे आदर मान करँय।"[10]

भारतीय इतिहास में गाँधी द्वारा चलाए जा रहे स्वदेशी आन्दोलन ने यहाँ के आम जन–मानस को गहराई से प्रभावित किया था। कवि हृदय कोमल व संवेदनषील होता है, वह अपने समय में चल रहे क्रांतिकारी अभियानों व उथल–पुथल में अपना स्वर मुखरित करता है। उनके काव्य में राष्ट्रहित सर्वोपरि है। इस युग के कवियों के लिए छत्तीसगढ़ के मान–सम्मान से बड़ा कोई चीज नहीं था। बंशीधर पांडे जी ने अपने मर्म की उद्‌भावनाओं को इस प्रकार से अभिव्यक्त है–

"आगू जूता, पाछू बात,
तब अवै छत्तीसगढ़ हाथ
ऐसे हाना जोरे हवै,
छत्तीसगढ़ ला बोरे हवै,
हे छत्तीसग़ढिया भाई मन,
अपन जगा के निदा ऐसन
सुन के जब हम चुप हो जाबो,
तो का फेरा हम मनुज कहाबो।"[11]

अँग्रेजों के राज्य में छत्तीसगढ़ के मजदूर, किसान बेहद दुःखी थे, इन्हें किसी भी समय बेगारी के बुला लिया जाता था, उपस्थित न होने पर उन्हें खूब गालियाँ सुननी पड़ती थी। कोटवार द्वारा मुनादी कर दी जाती थी ।

श्रीमती माग्रेट कुजूर
सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय धरमजयगढ़,
जिला रायगढ़ (छ. ग.)

ISSN : 3048-6971
JAN-MARCH 2023

संदर्भ सूची :

1. परसाई, डॉ. शोभना हरीष, छत्तीसगढ़ी साहित्य के समर्पित हस्ताक्षर डॉ. विनय कुमार पाठक. पृ. 68
2. परमार, नारायणलाल (2000), छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की भूमिका, रायपुर : पहचान प्रकाशन,
3. प्रसाद, दिनेश्वर (1986), लोकसाहित्य और संस्कृति. जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. पाठक, डॉ. विमल कुमार, छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन, आशु प्रकाशन, रायपुर 1983, पृ. 145
5. पाठक, डॉ. विनय कुमार (2020).जनवादी काव्य विमर्श. पंकज बुक, दिल्ली, पृ. 444.
6. पाठक, डॉ विनय कुमार, वर्मा डॉ. विनोद कुमार, छत्तीसगढ़ी का संपूर्ण व्याकरण सन् 2019, पृ. 15
7. पाठक, डॉ. रजनी, आधुनिक छत्तीसगढ़ी काव्य का विकासात्मक अध्ययन पृ. 49
8. पथित, रघुवीर अग्रवाल, जले रक्त से दीप. पृ. 79
9. पाठक डॉ. अर्चना (2021). कतका भुइंया. वैभव प्रकाशन, पृ. 58–59
10. पाठक, डॉ. विमल कुमार (1983). छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन. आशु प्रकाशन, रायपुर, पृ. 198.
11. पाठक, डॉ. अर्चना (2021). कतका भुइंया. वैभव प्रकाशन, पृ. 60–61